नई शिक्षा नीति में शिक्षा की गुणवत्ता राष्ट्र के विकास की प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण योगदान के रूप में कार्यरत है

विपिन कुमार

शौद्यार्थी शिक्षा विभाग
हिन्दु कॉलेज मुरादाबाद

सर [Abstract]

शिक्षा की गुणवत्ता राष्ट्रों के विकास की प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण कारक के रूप में कार्य करती है। राष्ट्र का विकास शिक्षकों के कंधो पर टिका हुआ है क्योंकि ये सभी पीढ़ी को आकार देती है। इस प्रकार शिक्षकों की गुणवत्ता सीधे शिक्षक शिक्षा की गुणवत्ता पर निर्भर करती है। शिक्षकों के पढ़ाने का तरीका गुणवत्ता में सुधार के लिए महत्वपूर्ण है। प्रभावी शिक्षा शिक्षक के साथ–साथ शिक्षा की गुणवत्ता भी बढ़ा सकती है। भारत में शिक्षा की गुणवत्ता, शिक्षक शिक्षा की आवश्यकता और शिक्षा और कुछ प्रमुख समस्याओं के उपायों को बढ़ावा देने में शिक्षक की भूमिका का उपयोग दोषपूर्ण चयन प्रक्रिया, छात्र–शिक्षक का नकारात्मक तरीका, उचित वुनियादी सुविधाओं की कमी, शिक्षक शिक्षा का अलगाव विकास के लिये सुविधाओं की कमी शिक्षक जन सर्विस प्रशिक्षण की उपेक्षा, अनुभव ,शोध, निजी क्षेत्र में व्यावसायीकरण आपूर्ति और मांग में असंतुलन गुणवत्ता संकट कौशल का खराब एकीकरण, शिक्षक और शिक्षक प्रशिक्षुओं के बीच मेल–मिलाप आदिषिक्षा के असगंत तरीके इस शोध पत्र में प्रस्तुत किये किये गये है। शिक्षक शिक्षा में सुधार के लिये पाठ्यक्रम का पुनर्गठन, नवाचार छात्र–शिक्षक के सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास, संस्थान की हीन गुणवत्ता को बंद करना, खुली ओर दूरस्थ षिक्षा, मूल्यांकन प्रणाली में सुधार, अच्छा शोध कार्य, उचित चयन प्रक्रिया, आईसीटी का प्रयोग इस शोध पत्र में बताये गये है।

कीवर्ड [Keywords]:–शिक्षक शिक्षा, शिक्षक प्रशिक्षु, गुणवत्ता

परिचय [Introduction]

शिक्षक साल के निर्माण की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण योगदान देते है। किसी भी देश की शिक्षा नीति गुणवत्ता शिक्षकों का निर्माण करने का महत्वपूर्ण पहलू होना चाहिए। शिक्षक समुदाय में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। किसी भी देश की संपूर्ण शिक्षा प्रणाली का अर्थ है शिक्षा नीति की सफलता या असफलता। अर्थात् किसी भी देश की संपूर्ण शिक्षा प्रणाली की षिक्षा नीति की सफलता या असफलता पर निर्भर करती है। एक शिक्षा–प्रणाली की दक्षता काफी हद तक शिक्षकों की दक्षता पर निर्भर करती है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि श्रेष्ठ शिक्षा के लिये उपकरण, पाठ्यक्रम, भूमिकारूप व्यवस्था, किताबें और शिक्षण विधियों की आवश्यकता होती है शिक्षक युवाओं को विभिन्न क्षेत्रों के लिये शिक्षित करने के लिये समाज के प्रमुख स्तंभों में से एक है। शिक्षक एक सामाजिक वास्तुकार है, जो वास्तव में आधारित शिक्षा की आवश्यकता को प्रदान करके भारतीय समाज की नयी पीढ़ी को आकार–प्रदान करते है। किसी भी समाज का सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक विकास एक शिक्षक पर निर्भर करता हैं।

पदोन्नति की योग्यता में षिक्षा और शिक्षा की योग्यता [Education and education qualification in promotion qualification]:-छात्र प्रदर्शन या आउटपुट का भाव और गुणवत्ता को देखने का एक तरीका विभिन्न तरीको के बीच संबध को चिंतित करता है। उपलब्धि परीक्षण, मूल्यांकन या परीक्षा परिणाम आमतौर पर छात्रों के आउटपुट होते है। बुनियादी ढांचे और संसाधनों की विस्तृत विविधता, शिक्षण वातावरण की गुणवत्ता, पाठ्यपुस्तकें, शिक्षक वेतन, पर्यवेक्षण प्रोत्साहन, शैक्षिक संस्थागत जलवायु, पाठ्यक्रम छात्रों की शारीरिक पारिवारिक और सामाजिक–आर्थिक संदर्भ में शिक्षिक दक्षता को आंतरिक और बाह्य रूप से मापा जाता है। आंतरिक रूप में पूर्णता, ड्रॉपआउट और पुनरावृत्ति की दरों से शैक्षिक दक्षता को मापा जाता है। दक्षता को बाहरी रूप से केंद्रित गुणवत्ता और शिक्षा की प्रासंगिकता के रूप से मापा जाता है। शिक्षक सषक्तीकरण पर विभिन्न प्रकार से बढ़ा है। चिंतनषील अभ्यास का विचार मानता है कि शिक्षक पेशेवर रूप से स्कूल और कक्षा की स्थिति को दर्शाने में सक्षम है इसलिये शिक्षक बड़ी संख्या में अनुदेषनात्मक सामग्री और कार्य प्रबंधन निर्णय लेने में अच्छे शिक्षको की गणतत्ता में निम्नलिखित शामिल होगें:–

1) आत्मविश्वास के साथ पढ़ाने के लिये विषय वस्तु का पर्याप्त ज्ञान ।

2) उपयुक्त और विविध शिक्षण पद्धतियों की श्रेणी में ज्ञान और कौषल।
3) शिक्षको की भाषा में प्रवाह।
4) युवा शिक्षाथियों में संवेदनशीलता औ रूचि का ज्ञान होना।
5) एक प्रभावी शिक्षण वातावरण बनाने और बनाये रखने की क्षमता।
6) कार्यक्रम और शिक्षण और सीखने के नए प्रतिमान पेष किये जाते है।
7) षिक्षण के लक्ष्यों के प्रति अच्छा मनोवल और समर्पण
8) शिक्षको में प्रभावी ढंग से संवाद करने की क्षमता।
9) छात्रों में सीखने के लिये उत्साह का संचार करने की क्षमता।
10) शिक्षण अभ्यास और बच्चों की प्रतिक्रिया को प्रतिबिम्वित करना।

यद्यपि ऊपर सूचीबद्ध शुभ प्रत्येक शिक्षक में व्यक्तिगत रूप से आवश्यक है, लेकिन शिक्षण को व्यक्तिगत गतिविधि के रूप में प्रभावी ढंग से अर्थत नही किया जाता है। शिक्षक हमेशा एक सामाजिक नेटवर्क या अपने छात्रों के साथ या स्कूल समुदाय के भीतर एक हिस्से में रूप में कार्य कारण है।

शिक्षक शिक्षा का अर्थ[Meaning of Teacher Education]:-शिक्षक दक्षता और दक्षता के विकास से संबंधित शिक्षक शिक्षा षिक्षक को पेशे की आवश्यकता को पूरा करने में सक्षम बनाती है। इसका अर्थ है कि उस ज्ञान का अधिग्रहण कौशल और क्षमता जो एक शिक्षक को अपने कर्तव्यों को प्रभावी ढंग से और कुशलता से निर्वहन करने में मदद करता हैं शिक्षक शिक्षा में तीन पहलू शामिल है–शिक्षण कौशल, शिक्षा कारण और व्यवसायिक कौशल। शिक्षण कौशल में विभिन्न तकनीकों, दृष्टिकोणों और राजनीतियों का समावेष होता है, जो शिक्षक की योजना बनाना और निर्देषन प्रदान करना, उचित प्रेरणाएँ प्रदान करना, प्रभावी छात्र मूल्यांकन को सुदृढ़ करना और संचालित करने में सहायता करने हेतु शिक्षक शिक्षा में तीन चरण होते है। –पूर्व–सेवा शिक्षक सेवा प्रेरण धरण और सेवा–शिक्षकों की शिक्षा। शिक्षक शिक्षा के इस काल के दौरान सक्रिय, षिक्षण प्रथाएं साथ–साथ चलती है। प्रेरण चरण का अर्थ है शिक्षक बनाने के लिये। नियुक्त शिक्षकों को सही संस्थान की प्रथाओं और गतिविधियों से परिचत कराया जाता है। जहाँ उनकी नियुक्ति की जाती है। सेवाकालीन शिक्षक शिक्षा का अर्थ है– शिक्षक शिक्षण पेशे में प्रवेश करने के बाद उन्हें प्राप्त करता है। उसे एक बेहतर शिक्षक बनाने के लिए अधिक से अधिक ज्ञान और शिक्षा की आवश्यकता है।

शिक्षा मंत्रालय में शिक्षा की चुनौती "एक नीति परिप्रेक्ष्य का उल्लेख किया है। जो भी नीतियां निर्धारित की जा सकती है। अंतिम विष्लेषण इन्हें शिक्षकों द्वारा अपने व्यक्तिगत के माध्यम से लागू किया जाता है। उदाहरण के लिये–शिक्षण अधिगम प्रक्रिया शिक्षक को शिक्षण के लिये पर्याप्त ज्ञान कौषल, रूचि और दृष्टिकोण प्राप्त करने की आवश्यकता होती है। मनोविज्ञान के नए सिद्धान्तों के अनुसार शिक्षकों का काम और अधिक जटिल और तकनीकी हो गया है इस आधुनिक भारत में शिक्षक को सुनियोजित, कल्पनाशील पूर्व सेवा और सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम के साथ कुशल बनाया जा सकता है। शिक्षक का बच्चों के प्रति दृष्टिकोण माता–पिता और समुदाय के साथ बातचीत करने की उनकी प्रेरणा, रूचि और प्रतिवद्धता और गुणवत्ता में भी योगदान देता है। और शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को प्रभावित करता है।

गुणवत्ता षिक्षक भर्ती की अवधारणा [Concept of Quality techer Education] :-गुणवत्ता एक सापेक्ष शब्द है लेकिन इसे इसके मूल शब्द से परिभाषित किया जा सकता है। गुणवत्ता षिक्षक षिक्षा कार्यक्रम को इनपुट प्रक्रिया और आउटपुट जैसे तीन बुनियादी घटकों के विष्लेषण के माध्यम से समझा जा सकता है। शिक्षक शिक्षा के इनपुट घटकों में ध्वनि सैद्धांतिक ज्ञान और शैक्षणिक कौशल, आकर्शक और अच्छी अच्छी गुणवत्ता वाले शिक्षक शामिल है। सुसज्जित पुस्तकालय आधारित और प्रासंगिक पाठ्यक्रम मेधावी छात्रों को जरूर और शिक्षक प्रशिक्षुओं में शिक्षण के लिए उचित योग्यता है। इन सभी तत्वों के बीच एक मधुर संबंध समन्वय के अभाव में शिक्षक शिक्षा की गुणवत्ता को प्रभावित करना लगभग असंभव है।

षिक्षक भर्ती में कुछ महत्वपूर्ण विषय[Some important topics in Teacher recruitment]:- शिक्षक शिक्षा का पाठ्यक्रम दोषपूर्ण है। छात्रो को स्कूल और समुदाय की वास्तविकताओं से अवगत नहीं कराया। इंटर्नषिप शिक्षण का अभ्यास, व्यावसायिक गतिविधियों आदि शैक्षिक गतिविधियों पर उचित ध्यान नहीं दिया गया। छात्र–शिक्षक वास्तविक परिस्थितियों में प्रशिक्षण के समय अत्यधिक ज्ञान का उपयोग नहीं करते है। चयन प्रक्रिया के दोषों से शिक्षकों की गुणवत्ता बिगड़ती है। शिक्षक किसी भी तरह से डिग्री प्राप्त करना चाहते हैं जिससे उन्हें रोजगार प्राप्त करने में सुविधा हो।

उचित सुविधाओं का अभाव[Leek of proper facilities] :-अनेक शिक्षक शिक्षण संस्थान प्रयोगात्मक स्कूल या प्रयोगशाला, पुस्तकालय और अन्य उपकरणों के लिए किसी भी सुविधा के बिना किराए के भवनों में चलाए जा रहे है। शिक्षक शिक्षा संस्थानों की विभिन्न प्रयोगशालाएं अर्थात् विज्ञान प्रयोगशाला मनोविज्ञान प्रयोगशाला मार्गदर्षन और परामर्ष प्रयोगशाला, शैक्षिक प्रोद्योगिकी प्रयोगशाला, कम्प्यूटर प्रयोगशाला या तो नहीं है वहाँ या वहुत वुरी स्थिति में है।

षिक्षक षिक्षा का अलगाव [Segregation of teacher education]:-कोठारी आयोग के अनुसार शिक्षक शिक्षा के अलगाव के तीन रूप है :– विश्वविद्यालयों के साहित्यिक जीवन से अलगाव कॉलेजों से अलगाव और अलगाव एक दूसरे का निर्माण करते है। शिक्षकों के व्यावसायिक विकास के लिए सुविधाओं का अभाव है। एक षिक्षक द्वारा अपने प्रशिक्षण अवधि के दौरान अर्जित ज्ञान और कौशल उसे जीवन भर एक उत्कृष्ट शिक्षक नहीं रख सकते है।

अपर्याप्त अनुभवजन्य अनुसंधान [Inadiquate enjoical research]:- शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम में किसी भी व्यवस्थित शोध का सही अध्ययन नहीं किया गया है। अधिकांश राज्यों में शिक्षक शिक्षा अभी भी विद्यार्थियों–शिक्षकों के एकत्रित शुल्क से चल रही है। जबकि राज्य अनुदान का बहुत कम हिस्सा है। ज्यादातर प्रवेश के समय संस्थान विद्यार्थियों से अधिक रूपये लेते है। सेफाइनेंसिंग संस्थाएँ जो महसूस करती है उसे चार्ज करती है। भौगोलिक क्षेत्रों के बीच आपूर्ति और मांग में असंतुलन है, जिसके परिणामस्वरूप तीव्र बेरोजगारी है।

गुणवत्ता वाले षिक्षक गुणवत्ता संकट [Quality teacher quality crisis]:-गुणवत्ता की धारणा, गुणवत्ता स्केलिंग और गुणवत्ता में असर शिक्षक शिक्षा की समस्याएँ है। यह अंतर दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। सभी कौशल सूचना प्रेमी कौशल भावनात्मक कौशल, मानव विकास कौषल, आध्यमिक कौशल शिक्षक शिक्षा में खराव एकीकृत के कारण मेरिट मस्ट हो जाती है।

षिक्षा के असंगत तरीके [Inconsistent methods of Education]:-शिक्षा की विभिन्न विधाओं में थोड़ी समानता है जैसे कि नई–मोड़ दूरी मोड और आमने–सामने मोड़। छात्रों और युवाओं के मध्य मूल्य क्षरण आज चिंता का विषय है। समाज में षिक्षको के प्रति सम्मान में वृद्धि हुई है।

शिक्षक शिक्षा की गुणवत्ता में वृद्वि के लिए उपाय [Measure to increase the quality of teacher Education]:-

1) पाठ्यक्रम का पुनर्गठन [Restructuring the course] :-सिद्धान्त और व्यावहारिक कार्य का अनुपात होना चाहिए। स्कूल में आवष्यक व्यावहारिक प्रकार के कार्य अध्ययन और विभिन्न रिकॉर्डिगं के लिये विषेश कार्यक्रम विकसित किया जाना चाहिए। पाठ्यक्रम की अवधि में परिवर्तन, सिंद्धात में वजन, अभ्यास शिक्षण, सूक्ष्म षिक्षण, परियोजना कार्य, सामुदायिक कार्य को करने पर बल दिया जाना चाहिए।

2) नवाचार [Innovation] :-शिक्षा विभाग को निम्नलिखित दिशाओं में विषेश अभिनव कार्य आयोजित करने चाहिए।

निष्कर्ष (The Conclusion):–

शिक्षक शिक्षा पर निष्कर्ष निकला है कि शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम के पाठ्यक्रम को समाज की बदलती जरूरतों के अनुसार समय समय पर संषोधित किया जाना चाहिए। शैक्षिक संस्थान को विभिन्न प्रकार की गतिविधियों जैसे दैनिक विधानसभा कार्यक्रमों, सामुदायिक जीवन, सामाजिक कार्य, पुस्तकालय संगठन और अन्य पाठ्य गतिविधियों के आयोजन के लिए सुविधाओं से लैस किया जाना चाहिए, जो आपसी प्रषंसा और साथी की लोकतांत्रिक भावना को वढ़ावा देते है। आने वाले दषको में शिक्षक शिक्षा में निरन्तर विकास और परिवर्तन देखने की संभावना है, शिक्षक को शैक्षिक प्रौद्योगिकी में नए विकास, मानव ज्ञान की वृद्धि और उपलब्ध सामग्री की विशाल रेंज से एक प्रासंगिक और उपर्युक्त पाठ्यक्रम बनाने की समस्या को समायोजित करना चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची (Bibliography):–

1. Adamson, C. (2012) Learning in a VUCA world, Online Educa Berlin News Portal, November 13
2. Agarwal, A. (2013) The Developing World of MOOCs Boston: MIT (Linc 2013 conference video: 1hr 34 mins in.)
3. Allen, I. and Seaman, J. (2014) Grade Change: Tracking Online Learning in the United States Wellesley MA: Babson College/Sloan Foundation

4. Anderson, C. (2008) The Ensd of Theory: The Data Deluge Makes the Scientific Method Obsolete Wired Magazine, 16.07
5. Anderson, L. and Krathwohl, D. (eds.) (2001). A Taxonomy for Learning, Teaching, and Assessing: A Revision of Bloom's Taxonomy of Educational Objectives New York: Longman
6. Anderson, T. (ed.) (2008) The Theory and Practice of Online Learning Athabasca AB: Athabasca University Press